|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 11. Februar 2024 | | |
| **06. Sonntag im Jahreskreis B** | | |
| Erste Lesung: Lev 13,1-2.43ac.44ab.45-46; Zweite Lesung:1 Kor 10,31 – 11,1; Evangelium: Mk 1,40-45 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 384, 1-3 | Hoch sei gepriesen unser Gott |
|  | GL 400, 1+2 | Ich lobe meinen Gott |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 168, 1+2 | Gloria. Ehre Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 32,1-2.5.10-11 | |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 431 | Herr, du bist ein Schild für mich |
|  | GL 307, 5 | Meine Hilfe und mein Retter |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 143, 3 | Herr, ob den Himmel |
|  |  | |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Ein großer Prophet wurde unter uns erweckt:* | |
|  | *Gott hat sein Volk heimgesucht.* | |
|  |  | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 180, 1+2 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 187, 1+2! | Wir weihn der Erde Gaben |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 195 | Heilig |
|  |  |  |
| Friedensgruß/ | GL 798, 1+2 | Wo Meschen sich vergessen |
| Agnus Dei: | GL 204 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 421, 1-3 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  | GL 796, 1+4+5! | Herr, wir bitten: Komm |
|  | GL 414, 1-4 | Herr, unser Herr |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 455, 1+2 | Alles meinem Gott zu Ehren |
|  | GL 403, 1-3 | Nun danket alle Gott |
|  |  |  |